वास्तुशास्त्र की आधुनिक युग में उपयोगिता

अंजलि उपाध्याय*

संसार का प्रत्येक प्राणी विश्राम की आकांक्षा के साथ ही अपने आवास पर आता है जहॉ वह अपने दिन भर की थकान दूर कर सके। उसे अपने घर में स्वर्ग की तरह ही भौतिक सुख और मानसिक शान्ति मिले।

रोटी, कपड़ा और मकान यही मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। उसमें भी मकान अर्थात् घर जो बने वह ऐसा बने की मनुष्य की चतुर्दिक वृद्धि हो परन्तु कभी–कभी बिल्कुल इसके विपरीत होता है, हम अपने आस–पास ही देखते है कि कोई बहुत बड़ा बंगला है उसमें बहुत धनाढ्य लोग है किन्तु वहॉ शान्ति नहीं है। और वहीं दूसरी ओर छोटा सा ही मकान है किन्त वहॉ कोई आधि–व्याधि नहीं है।

अतः इन दुःखों का एक निवारण वास्तुशास्त्र ही है। वास्तुशास्त्र ज्योतिषशास्त्र का ही एक हिस्सा है जिसका उपयोग करके हम इन दुःखों का निवारण कर सकते है।

वास्तु शब्द का अर्थ है – निवास करना।

जिस भूमि में मनुष्य निवास करते है, उसे वास्तु कहा जाता है। वास्तुशास्त्र में गृह–निर्माण सम्बन्धी विविध नियमों का प्रतिपादन किया गया है। उनका पालन करने से मनुष्य को अन्य कई प्रकार के लाभों के साथ–साथ आरोग्य लाभ भी होता है। वास्तुशास्त्र का विशेषज्ञ किसी मकान को देखकर यह बता सकता है कि इसमें निवास करने वाले को क्या–क्या रोग हो सकते है अतः इस लेख में मैं इसी बात का उल्लेख करूंगी कि घर निर्माण में क्या–क्या सावधानियां बरतनी चाहिए।

भूमि परीक्षा :–

भूमि के मध्य में एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा गढ्ढा खोदे, खोदने के बाद निकली हुई सारी मिट्टी पुनः उसी गढ्ढे में भर दे। यदि गढ्ढा करने से मिट्टी शेष बच जाय जो वह उत्तम भूमि है[1] अधम भूमि में निवास करने से स्वास्थ्य और सुख की हानि होती है।

शोधच्छात्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (संस्कृत विभाग)

चूहों के बिलवाली, बांवी वाली, फटी हई, उबड़ खाबड़, गढ्ढोवाली और टीलों वाली भूमि का त्याग कर देना चाहिए।

जिस भूमि में गढ्ढा खोदने पर राख, कोयला, भस्म हड्डी, भूसा आदि निकले उसे भूमि पर मकान बनाकर रहने से रोग होते है तथा आयु क्षीण होती है।

भूमि की सतहः–

पूर्व उत्तर और ईशान, दिशा में नीची भूमि सब दृष्टियों से लाभप्रद होती है, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य और मध्य में नीची भूमि रोगों को उत्पन्न करने वाली होती है।[2]

दक्षिण तथा आग्नेय के मध्य नीची और उत्तर एवं वायव्य के मध्य ऊंची भूमि रोग उत्पन्न करती है।

गृहारम्भः–

वैशाख, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में गृहारम्भ करना चाहिए। इससे आरोग्य तथा धन–धान्य की प्राप्ति होती है।[3]

गृह का आकार :–

चौकोर तथा आयताकार मकान उत्तम होता है। आयताकार मकान में चौड़ाई की दुगनी से अधिक लम्बाई नहीं होनी चाहिए।[4]

कछुए के आकार वाला घर पीड़ादायक होता है कुम्भ के आकारवाला घर कुष्ठ रोग प्रदायक है, तीन तथा छः कोन वाला घर संतान को कष्ट देने वाला है। आठ कोन वाला घर रोग उत्पन्न करता है। घर को किसी एक दिशा में आगे नहीं बढ़ाना चाहिए। यदि वायव्य दिशा में आगे बढ़ाया जाय तो वात व्याधि होती है। यदि वह दक्षिण दिशा में बढ़ाया जाय तो मृत्यु भय होता है। उत्तर दिशा में बढ़ाने पर रोगों की वृद्धि होती है।

गृह निर्माण की सामग्रीः–

ईट लोहा पत्थर, मि्टी और लकड़ी ये नये मकान में नये ही लगाने चाहिए। एक मकान में उपयोग की गयी लकड़ी दूसरे मकान में लगाने से गृहस्वामी का नास होता है।[5]

मन्दिर राजमहल और मठ में पत्थर लगाना शुभ है परन्तु घर में पत्थर लगाना शुभ नहीं होता है। वृक्ष भी हमारे घरों के लिए उपयोगी है। वृक्ष केवल माहौल को हरा–भरा बनाने और ताजा हवा देने में काम नहीं आते बल्कि वास्तु के अनुरूप लगे वृक्ष लाभ भी देते है।

पीपल, कदम्ब, नीम, बहेड़ा, आम, पाकर, गूलर, रीठा, वट, इमली, बबूल और सेमल के वृक्ष की लकड़ी घर में काम में नहीं लानी चाहिए।[6]

आग्नेय दिशा में वट, पीपल, सेमल, पाकर तथा गूलर का वृक्ष होने से पीड़ा होती है जो मृत्य कारक होती है। दक्षिण में पाकर वृक्ष से नेत्र रोग होता हैः बेर, केला, अनार, पीपल और नीबू जिस घर में होते है उस घर की वृद्धि नहीं होती है।

घर के पास कांटे वाले, दूध वाले और फलवाले वृक्ष हानिप्रद है।[7]

पाकर, गूलर, आम, नीम, बहेड़ा, पीपल, कपिथ्य, बेर, निगुण्डी, इमली, कदम्ब, बेल तथा खजूर ये सभी वृक्ष घर के समीप अशुभ होते है।

देवमन्दिर, चौराहे के समीप घर होने से दुःख शोक तथा भय बना रहता है।

द्वारः–

जिस दिशा में द्वार बनाना हो उस ओर मकान की लम्बाई को बराबर नौ भागों में बॉटकर पॉच भाग दाये और तीन भाग बायें छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। दायॉ और बायॉ उसको माने जो घर से बाहर निकलते समय हो।

पूर्व अथवा उत्तर में स्थित द्वार सुख समृद्धि देने वाला होता है। दक्षिण में स्थित द्वार विशेष रूप से स्त्रियों के लिए दुःखदायी होता है।[8]

द्वार का अपने आप खुलना या बन्द होना अशुभ है। द्वार के अपने आप खुलने से उन्माद रोग होता है और अपने आप बन्द होने से दुःख होता है।[9]

जल स्थान, कुऑ या भूमिगत टंकी पूर्व, पश्चिम, उत्तर अथवा ईशान दिशा में होनी चाहिए। जलाशय या उर्ध्व टंकी उत्तर या ईशान दिशा में होनी चाहिए।

यदि घर के दक्षिण में कुऑ हो तो आयु का क्षय होता है।

ईशान दिशा में पति पत्नी शयन करे तो रोग होना अवश्यम्भावी है।

सदा पूर्व या दक्षिण की तरफ सिर करके सोना चाहिए, उत्तर या पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से शरीर में रोग होते हैं तथा आयु क्षीण होती है।[10]

दिन में उत्तर की तथा रात्रि में दक्षिण की ओर मुख करके मल–मूत्र का त्याग करना चाहिए।

एक दीवार से मिले हुए दो मकान यमराज के समान गृहस्वामी का नाश करने वाले होते हैं। किसी मार्ग या गली का अन्तिम मकान कष्टदायी होता है।

घर की सीढ़ियों, खम्भे, खिड़कियॉ, दरवाजे आदि की इन्द्र–काल, राजा इस क्रम में गणना करें यदि अन्त में काल आये तो अशुभ समझना चाहिए।

दीपक या बल्ब का मुख पूर्व अथवा उत्तर की ओर होना चाहिए।

दन्त धावन, भोजन और क्षौर कार्य सदा पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके ही करना चाहिए।

निष्कर्षतः हमें स्वस्थ और समृद्ध होने के लिए वास्तु के इन नियमों का ध्यान अवश्य देना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1	वृहत्संहिता वास्तुविद्याध्याय	श्लोक संख्या – 92
2	वृहत्संहिता वास्तुविद्याध्याय	श्लोक संख्या– 115, 116
3	अतिवृहत् अवकहड़ाचक्रम	पृष्ठ संख्या–6, श्लोक संख्या– 30
4	ज्योतिषतत्वांक	पृष्ठ संख्या– 381
5	ज्योतिषतत्वांक	पृष्ठ संख्या– 382
6	वृहत्संहिता वास्तुविद्याध्याय	श्लोक संख्या– 85
7	वृहत्संहिता वास्तुविद्याध्याय	श्लोक संख्या– 89
8	वृहत्संहिता वास्तुविद्याध्याय	श्लोक संख्या– 63, 64, 65, 66
9	वृहत्संहिता वास्तुविद्याध्याय	श्लोक संख्या– 79, 80
10	वृहत्संहिता वास्तुविद्याध्याय	श्लोक संख्या– 124